ISSN No. : 2395-4000

6

प्रयाग-पथ

प्रयाग-पथ

साहित्य, कला और संस्कृति का संचयन

वर्ष : 4, अंक : 6, पूर्णांक : 6, जुलाई-2018

सम्पादक
हितेश कुमार सिंह
सह सम्पादक
डॉ. नीतू सिंह
आवरण
वाज़दा खान
लेज़र टाइपसेटिंग
ज़िया कम्प्यूटर्स, 3/11, समीर प्लाजा,
पुराना कटरा, इलाहाबाद

मुद्रक
इण्डियन प्रेस प्रा.लि.,
36, पन्नालाल रोड, इलाहाबाद-211002

मूल्य
एक प्रति : रु. 50.00 (डाक खर्च अतिरिक्त)
संस्थाओं के लिए : रु. 60.00 (डाक खर्च अतिरिक्त)
सदस्यता चार अंक : 300.00 (डाक खर्च सहित)
आजीवन सदस्यता : पाँच हजार रुपये
संस्थाओं के लिए : दस हजार रुपये

सम्पर्क
353/183/2, टैगोर टाउन, इलाहाबाद-211002, उत्तर प्रदेश
मोबाइल : 09452790210
ई-मेल : prayagpathpatrika@gmail.com

संपादन, प्रकाशन एवं संचालन पूर्णतः अवैतनिक/अव्यवसायिक प्रकाशित रचनाओं की रीति-नीति या विचारों से संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं है। समस्त कानूनी विवादों का न्याय क्षेत्र इलाहाबाद उच्च न्यायालय, उत्तर प्रदेश होगा।

स्वामी-संपादक-प्रकाशक-मुद्रक हितेश कुमार सिंह द्वारा 353/183/2, टैगोर टाउन, इलाहाबाद के लिए इण्डियन प्रेस प्रा0लि0, 36, पन्नालाल रोड, इलाहाबाद-02 से प्रकाशित और मुद्रित

अनुक्रम

संपादक की ओर से

जीवन

रविकथा-कुछ झलकियाँ : ममता कालिया-1

जीवनी

लखनऊ उनका वतन था, देश था : विष्णु नागर-4

साक्षात्कार

विश्वनाथ त्रिपाठी से एक बातचीत : मनोज मोहन-9

पुनश्च अज्ञेय

सोन-मछली का अवलोकन : अरुण होता-13/मेरे देश की आँखें और अज्ञेय : सुधीर रंजन सिंह-17

कहानियाँ

लाश : प्रियदर्शन-22/रजामंदी : सूर्यनाथ सिंह-30/न्याय विभाग ने मरे हुए व्यक्ति के साथ भूल-सुधार किया : मनोज कुमार पाण्डेय-37/विजेता : जीवन सिंह ठाकुर-44

लेख

आज का सांस्कृतिक परिदृश्य और निराला : हरीश चन्द्र पाण्डेय-48/महासमर में भाषा : कृष्णमोहन-52/पुरी की साहीजात परम्परा व रामलीला : निरन्तरता एवं परिवर्तनशील स्वरूप : नीतू सिंह-58/गेटे का फाउस्ट : विश्वविख्यात एक कालजयी कृति : विजेन्द्र-64/समाज में उठने वाली ध्वनियाँ पकड़ने वाले कवि त्रिलोचन और चम्पा : डी.एन. प्रसाद-68/शरतचंद्र की विलक्षणता : प्रियम अंकित-72/कल्पना में गणराज्य : भावना ओझा-75

कविताएँ

कविताएँ : रामदरश मिश्र-83/कविताएँ : राजकुमार कुम्भज-87/कविताएँ : संतोष कुमार चतुर्वेदी-90/कविताएँ : वाज़दा खान-95/कविताएँ : न्यायमूर्ति सुधीर नारायण-100/कविताएँ : राम मिलन प्रसाद-102

स्मरण

हिन्दी गौरव : न्यायमूर्ति प्रेम शंकर गुप्त : न्यायमूर्ति पंकज मित्तल-105

समीक्षाएँ

तत्कालीन काव्यालोचना की खूबियों और खामियों का आइना : मुश्ताक़ अली-108/ज़िंदा सबूतों के साथ समय का सच और आत्म-स्वीकृतियाँ : धनंजय चोपड़ा-110/क्रांतिकारी आन्दोलन की स्मृतियाँ : समीर कुमार पाठक-114/प्रकृति और पर्यावरण का मणिकांचन संयोग : निशांत-119/आलोचक की कविता : श्रीपर्णा तरफदार-123/फैजाबाद : सांस्कृतिक गजेटियर-अवध की धरोहर : विद्या बिन्दु सिंह-128/हाशिये का हलफनामा : धीरेन्द्र प्रताप सिंह-130/रचनाकार : ममता कालिया का संसार-पढ़ते, लिखते, चलते : प्रभात शर्मा-133/सम्पूर्ण देश में फैली अराजकता का नग्न दस्तावेज़ : मदारीपुर जंक्शन : रीतिका अवस्थी-136/एक यायावर रंगकर्मी के कुछ नोट्स : अनुराग शुक्ल-138

सम्पादक की ओर से

आज हमारे समाज में जिस तरह से लोगों के विचार और व्यवहार में परिवर्तन आया है, वह एक स्वस्थ समाज के लिए हितकर नहीं है। जाति, धर्म, क्षेत्रवाद या भ्रष्टाचार रूपी मोहजाल के बहकावे में आकर हम जिस तरह से मानव-मूल्यों को दरकिनार कर रहे हैं, वह हमारे लिए बहुत ही घातक है। जाति और धर्म के नाम पर जिस तरह से हम मरने-मारने पर उतारू हो जाते हैं, वह हमारी नैतिकता, संवेदनशीलता, मानवता रूपी अच्छी सोच को पंगु बना देती है। संभवतः यही कारण है कि जब हम इस ज्वाला में जल रहे होते हैं तो हमें अच्छे-बुरे के भेद का पता नहीं चल पाता और हमारी धार्मिक भावनाएँ धर्म की रक्षा करने के लिए हमें प्रेरित करती हैं। लेकिन, हमें यह कदापि नहीं भूलना चाहिए कि इस सृष्टि का सबसे बड़ा धर्म मानवता है। आज जाति, धर्म एवं सम्प्रदाय के नाम पर कुछ लोग स्वस्थ समाज को खोखला करने का कार्य कर रहे हैं। हमें समाज में फैले ऐसे तत्वों को पहचान कर उनकी गतिविधियों से सावधान रहने एवं समाज के लोगों को सतर्क करने की आवश्यकता है।

हालांकि उपर्युक्त यह सभी काम शासन की गद्दी पर बैठे हुए व्यक्ति को बड़ी दृढ़ता के साथ करना चाहिए, लेकिन इन कामों से हम भी अपना मुँह नहीं मोड़ सकते हैं। यह सर्वविदित है कि साहित्य, समाज और संस्कृति का रक्षक होता है। जिस समाज का अपना